ISBN 978-81-952235-8-9, राष्ट्रवाद, ISDR, Ranchi, India.

राष्ट्रवाद

सम्पादिका

डॉ. सरिता कुमारी

सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग

जगन्नाथ नगर महाविद्यालय, राँची, झारखण्ड

इंस्टिच्यूट फॉर सोशल डेवलपमेंट एण्ड रिसर्च

गाड़ी होटवार, राँची - 835217 (झारखंड)

ISBN 978-81-952235-8-9, राष्ट्रवाद, ISDR, Ranchi, India.

राष्ट्रवाद

ISBN : 978-81-952235-8-9

प्रथम संस्करण : 2021

© इंस्टिच्यूट फॉर सोशल डेवलपमेंट एण्ड रिसर्च, राँची

प्रकाशक :
इंस्टिच्यूट फॉर सोशल डेवलपमेंट एण्ड रिसर्च, राँची, झारखण्ड.

Email :
isdr.ranchi@yahoo.com, isdr.ranchi@gmail.com

लेजर कम्पोजिंग :
एम. एल. कम्प्यूटर, गाड़ी होटवार, राँची, झारखण्ड

मूल्य: 520.00

☞इस पुस्तक का कोई भी भाग आभारोक्ति के साथ उद्धृत किया जा सकता है।

➪लेखकों द्वारा प्रकट किये गये विचार उनके हैं, इंस्टिच्यूट फॉर सोशल डेवलपमेंट एंड रिसर्च, राँची तथा सम्पादक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

ISBN 978-81-952235-8-9, राष्ट्रवाद, ISDR, Ranchi, India.

8. राष्ट्रवाद और वैश्वीकरण
-जगजीत कौर
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखंड 64

9. शैक्षिक परिसरों एवं शिक्षण में राष्ट्रीयता
-डॉ. ओनिमा मानकी
सहायक प्रोफेसर, बी. एड. विभाग, महिला कॉलेज (कोल्हान विश्वविद्यालय), चाईबासा, झारखण्ड 69

10. आर्थिक राष्ट्रवाद
-डॉ. मिनी विश्वकर्मा
एकेडेमिक काउंसलर, इग्नू (इतिहास), मारवाड़ी कॉलेज, राँची, झारखंड 75

11. नागरिक धर्म और राष्ट्रवाद
-अनीता कुमारी
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड 78

12. क्रांतिकारी राष्ट्रवाद
-ज्ञानेश्वर पाठक
शोधार्थी, इतिहास विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड 85

13. साहित्य और राष्ट्रीयता
-डॉ. सोनू अन्नपूर्णा
एसोसिएट प्रोफेसर, स्नातकोत्तर केंद्र, हिन्दी विभाग, गया कॉलेज (मगध विश्वविद्यालय बोधगया), गया, बिहार 92

14. रेणु का उपन्यास 'कलंकमुक्ति' और आधुनिक कामकाजी महिलाओं का स्वातंत्र्य बोध
-डॉ. पोर्शिया सरकार
सहायक अध्यापिका, हिन्दी विभाग, निस्तारिणी कॉलेज, पुरुलिया, पश्चिम बंगाल 97

15. वैदिक राजनीतिक चिंतन में राष्ट्र की शासन व्यवस्था
-राजकुमार धीवर
सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, वर्धमान राज कॉलेज, वर्धमान, पश्चिम बंगाल 102

ISBN 978-81-952235-8-9, राष्ट्रवाद, ISDR, Ranchi, India.

रेणु का उपन्यास 'कलंकमुक्ति' और आधुनिक कामकाजी महिलाओं का स्वातंत्र्य बोध

डॉ. पोर्शिया सरकार

सहायक अध्यापिका, हिन्दी विभाग, निस्तारिणी कॉलेज, पुरुलिया, पश्चिम बंगाल

रेणु का यह उपन्यास पहले 'दीर्घतपा' नाम से बिहार ग्रंथ कुटिर, पटना से दिसंबर, 1963 में प्रकाशित हुआ था। बाद में इसका परिवर्द्धित संस्करण हिन्दी पॉकेट बुक्स, दिल्ली के द्वारा 1972 में 'कलंकमुक्ति' के नाम से प्रकाशित हुआ। जैसा कि हममें से बहुत से पाठक जानते हैं कि रेणु का सम्पूर्ण कथा साहित्य मानव समस्याओं का दस्तावेज़ है। चाहे 'मैला आँचल' हो या 'परती-परिकथा' रेणु ने बिहार के एक अंचल विशेष के लोगों के जीवन संघर्षों का बड़ी सच्चाई से वर्णन किया है। परंतु ऐसा लगता है कि वे समस्याएँ आज भी ज्वलंत है। आज भी हमारा समाज उनसे जूझ रहा। इसी परिप्रेक्ष्य में अगर हम 'कलंकमुक्ति' उपन्यास को देखें तो हम पाएँगें कि रेणु का उद्देश्य सिर्फ समाज के कठोर, क्रूर और कलुषित मान्यताओं को दर्शाना नहीं है बल्कि उन पर प्रहार करना है। ताकी समाज को सत्यम्, शिवम् एवं सुंदरम् की ओर ले जाया जा सके। 'कलंकमुक्ति' रेणु द्वारा लिखी एक ऐसी लघु उपन्यास है जिसकी कथा के केंद्र में पटना की एक 'वर्किंग वुमेन्स हॉस्टल' है जहाँ पर छोटे-बड़े गाँव, कसवों एवं दूरदराज इलाकों की कामकाजी महिलाएँ रहती है, जैसे- तारावती, गौरी देवी, शिवकुमारी, श्यामा, जानकी देवी, शारदा कुमारी, चंद्रमोहिना, विभावति, कुन्ती एवं रुक्मिनी आदि। जो टाइपिस्ट, टेलिफोन विभाग, खादी प्रतिष्ठान की सेल्स गर्ल, नर्स, महिला गाईड, प्रोफेसर, अध्यापिका तथा रेडियो स्टेशन की लेडी अनाउन्सर का काम करती है। जीवन की नाना समस्याओं से जूझते हुए रेणु ने इनके अन्तर्द्वन्द्वों को प्रस्तुत किया है। मुख्य महिला पात्र के रूप में बेला गुप्त को दर्शाया गया है। जो इस हॉस्टल की सुपरिण्टेण्डेण्ट ही नहीं बल्कि मैटेरनिटी सेन्टर, शिल्प केंद्र

रेणु का कथेतर संसार

डॉ. पोर्शिया सरकार

आनन्द प्रकाशन
कोलकाता

© डॉ. पोर्शिया सरकार

प्रकाशक :
आनन्द प्रकाशन
176/178, रवीन्द्र सरणी
कोलकाता - 700007

ISBN : 978-93-88858-75-5

प्रथम संस्करण : 2021

मूल्य : 395.00

मुद्रक :
रुचि प्रिंटर्स
कोलकाता - 7

अनुक्रम

प्राक्कथन	5
कथेतर साहित्य का स्वरूप	9
रेणु के घटनापरक कथेतर गद्य साहित्य में मानवीय समस्याओं के विविध रूप	41
रेणु के जीवनीपरक कथेतर गद्य साहित्य में मानवीय समस्याओं के विविध रूप : संस्मरण और रेखाचित्र	91
रेणु के निबंधों में चित्रित मानवीय समस्याओं के विविध रूप	107
रेणु के अन्य कथेतर साहित्य में चित्रित मानवीय समस्याएँ	123
रेणु के कथेतर पद्य साहित्य में मानवीय समस्याओं के विविध आयाम	147
उपसंहार	161

प्राक्कथन

साहित्य निरन्तर बहनेवाली अनन्त जल-धारा है। वह निरन्तर अपनी गति, लय और स्थिति में बदलाव लिए नित्य नए रूप को धारण करता है। समय-समय पर अनगिनत रचनाकारों ने इसकी धारा को और तेज और नया मोड़ दिया है। रेणु एक ऐसे कथाकार हैं, जिन्हें अपनी रचनाओं में अपने समय की नब्ज को पकड़ने की अनोखी ताकत है। उनका कथेतर साहित्य तत्कालीन जीवन संघर्ष, दुःख, द्वंद्व, संकटबोध और तनाव उत्पन्न करनेवाली परिस्थितियों को प्रकट करते हुए भी आज अप्रासंगिक नहीं है। अपने कथेतर विधाओं में रेणु अपनी गहन अनुभूतियों के जरिए इतिहासबोध तक जाते हैं। रेणु के कथेतर साहित्य में वर्णित समय समाज एक सम्पूर्ण युगबोध है।

जब हम फणीश्वरनाथ रेणु का नाम लेते हैं, तो हमारे मन में या तो 'मैला आँचल' या 'परती परिकथा' या फिर 'तीसरी कसम' की याद आने लगती है। यह सर्वविदित है कि वे एक ऐसे कथा-शिल्पी हैं, जिन्होंने सफेद कागज के टुकड़ों पर मानवीय संवेदनाओं को साकार कर दिया है। उनका सम्पूर्ण साहित्य सत्यानुभूतियों की मार्मिक अभिव्यक्ति है। उन्होंने मनुष्य को विभिन्न परिस्थितियों में जूझते हुए देखा है। उसे गरीबी, महामारी, बेकारी, युद्ध और शोषण में जर्जरित होते, दम तोड़ते हुए भी देखा है। उन्होंने जमींदारों, साहूकारों और राजनैतिक रूप से शक्तिशाली व्यक्तियों द्वारा मानवीयता का गला घोंटते हुए देखा है। रेणु का सम्पूर्ण साहित्य इन्हीं मानवीय समस्याओं का दस्तावेज है। रेणु का कथा साहित्य अमर है और कथेतर साहित्य अद्वितीय। उन्होंने रिपोर्ताज, रपट, संस्मरण, रेखाचित्र, साक्षात्कार, पत्र, निबंध, हास्य-व्यंग्य, कविता, गद्यगीत आदि विभिन्न साहित्यिक विधाओं में लेखन-कार्य किया है। हिन्दी जगत् में इतनी सारी साहित्यिक विधाओं में लिखनेवाले साहित्यकार विरल ही हैं। रेणु का सम्पूर्ण कथेतर साहित्य उनके जीवन-संकल्प 'सबार ऊपरे मानुष सत्य' का ही साकार रूप है। उनका कथेतर साहित्य मानव की करुण गाथा है। रेणु के

ETHICS

in Modern Era

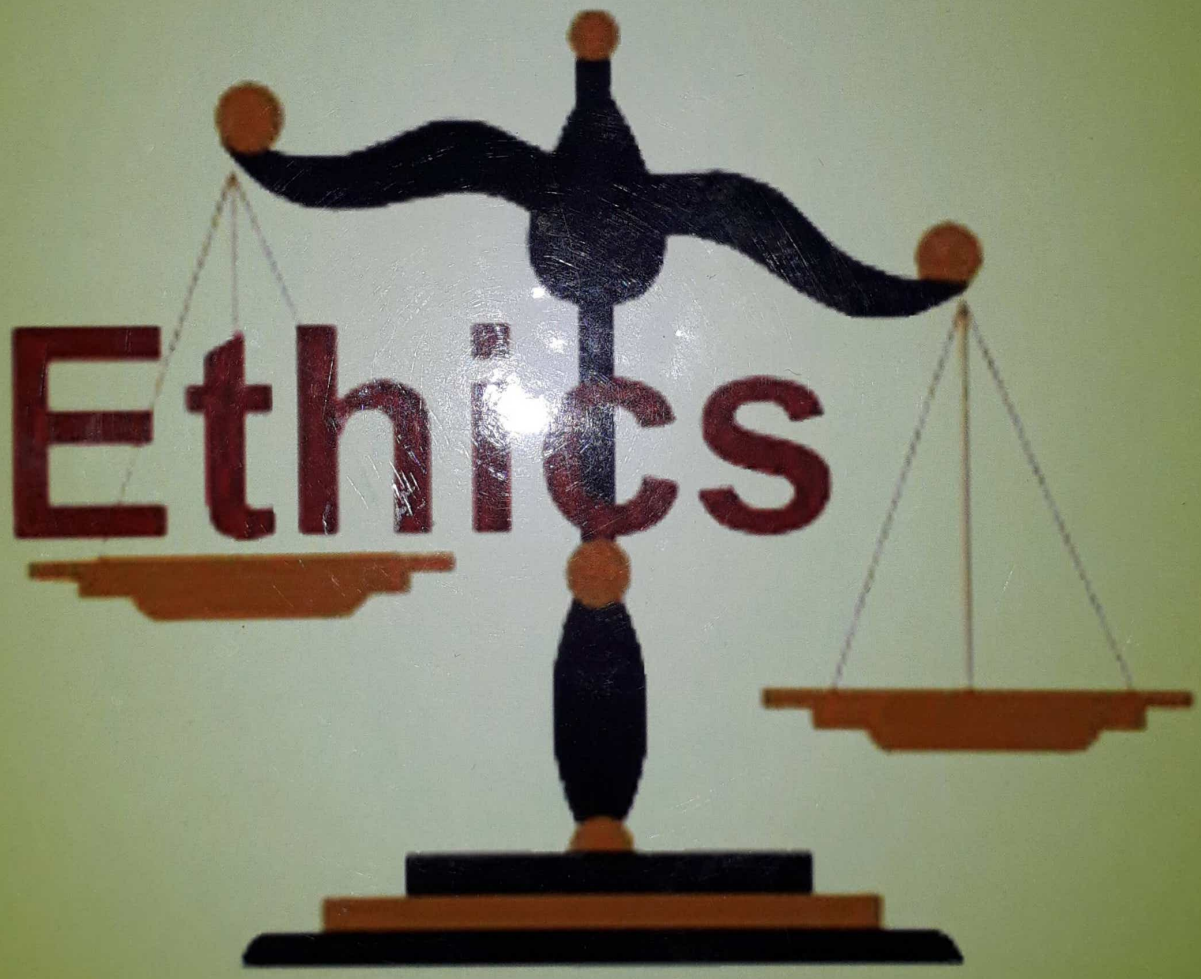

Dr. Ajay Kumar Singh

Ethics in Modern Era

First Edition: 2021

© Institute for Social Development and Research, Ranchi, Jharkhand

☞ No part of this book can be reproduced / reprinted / used without due acknowledgement of the Author/Publisher.

Publisher:
Institute for Social Development and Research, Ranchi, Jharkhand

ISBN: 978-81-942601-3-4

Price: Rs. 250.00

Contents

1. धर्म में नैतिकता
-डॉ. उषा टोप्पो
सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखंड 06

2. साहित्य में नैतिकता का प्रश्न और रेणु के साक्षात्कार
-डॉ. पोर्शिया सरकार
सहायक अध्यापिका, हिन्दी विभाग, निस्तारिणी कॉलेज, पुरुलिया, पश्चिम बंगाल 10

3. राजनीतिक नीतिशास्त्र
-जितेन्द्र भारती
शोधार्थी, स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड 15

4. राजनीतिक नैतिकता
-शक्ति कुमार
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड 18

5. राजनैतिक नैतिकता
-नुतन अंजना टोप्पो
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखंड 27

6. अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र: एक परिचय
-डॉ. अनिल कुमार वर्मा
सह-आचार्य, विश्वविद्यालय दर्शन विभाग, सिदो कान्हु मुर्मू विश्वविद्यालय, दुमका, झारखण्ड 36

7. पर्यावरण नीतिशास्त्र: एक परिचय
-डॉ. चम्पावती सोरेन
सहायक प्रोफेसर, दर्शन विभाग, संताल परगना महिला महाविद्यालय, दुमका, झारखण्ड 39

8. पर्यावरण नैतिकता
-हिमरश्मि खलखो
शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखंड 42

9. साहित्य में लोक कल्याण
-मृदुला मंडल
अतिथि व्याख्याता, हिन्दी विभाग, जामताड़ा कॉलेज, जामताड़ा, झारखण्ड 51

साहित्य में नैतिकता का प्रश्न और रेणु के साक्षात्कार

डॉ. पोर्शिया सरकार
सहायक अध्यापिका, हिन्दी विभाग, निस्तारिणी कॉलेज, पुरुलिया, पश्चिम बंगाल

साक्षात्कार एक आधुनिक और सशक्त विधा है। यह पाठकों का लेखक से परिचय करवाती है। इस विधा के जरिए हम रचनाकार के विचारों, मूल्यबोध एवं उसकी आस्था-अनास्था से परिचित होते हैं। साक्षात्कार वास्तव में उस झरोखे के समान है, जिससे लेखक के दिल की धड़कन (हृदय स्पन्दन) को बिना रूकावट सुन सकते हैं। साहित्य की दूसरी विधा में लेखक कुछ पूर्वाग्रह के चलते और कुछ संस्कारजनित विवशता के कारण पूर्ण रूप से खुलकर सामने नही आता है। कुशल साक्षात्कारकर्ता के समक्ष वही लेखक अपने विचारों, संस्कारों, जीवन मूल्यों, सामर्थ्य एवं विवशता के साथ खुलकर सामने आता है। जहाँ तक सवाल है, रेणु द्वारा दिए गए साक्षात्कारों का तो वह, उनके जीवन मूल्यों का दर्पण है। उनके द्वारा दिये गये साक्षात्कारों के जरिए हम उनके हृदय के कोने-कोने में झाँक सकते हैं। रेणु मूल रूप में किस तरह के इन्सान हैं, उनकी पसंद-नापसंद की कौन-सी चीजें हैं। वे किन बातों पर खुश होते हैं और कौन-सी बात उन्हें बेहद मायूस करती है, इन सभी बातों को हम भली-भाँति समझ सकते हैं।

रेणु समाज में पनपते दुराव और मूल्यों में हो रहे विघटन से काफी चिंतित होते हैं। इसका जिक्र उन्होंने परती-परिकथा का वर्णन करते हुए भी किया है। व्यक्ति अपने-आप में ही सिमटता चला जा रहा है। भाई से भाई अलग होकर समाज में अपनी पहचान बनाने की कोशिश कर रहा है। संयुक्त परिवार टूटकर बिखर रहे हैं।

पैसे की जरूरत हर किसी को है, पर जरूरत से अधिक कमाने की चाहत हो जाए तो मनुष्य का स्वार्थ धीरे-धीरे उस पर हावी होने लगता है और अंत में वह इतना दब जाता है कि सारे रिश्तों को झूठा समझने लगता है। धीरे-धीरे वह परिवार और समाज से कटकर एक यंत्र बन जाता है और अकेला होता चला